Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 2
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

रामदरश मिश्र के उपन्यासों मे बाढ़ एक आपदा

डॉ. गोकुलदास सोनु ठाकरे, नं. ता. वि. स. का जी. टी. पाटील कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय नंदुरबार जि.नंदुरबार

शोध सार :

इस आलेख में गोरखपुर जिले के अविकसित या पिछडे हुऐ गाँव तिवारीपुर और पांडेपुरवा गाँव की बाढ़ आपदा पर चर्चा की गयी है | रामदरश मिश्री ने गोरखपुर के जनपदीय क्षेत्र या अंचल पर अपनी लेखनी चलायी है | मिश्रजी के उपन्यासों में पूर्वी उत्तर प्रदेश का ही अँचल चित्रित है, जिसमें आजादी के पूर्व और आजादी के बाद गाँवों की यथार्थ स्थिति समझने की दृष्टि से अपना ही महत्व रखती है | गाँव व्यापक होने के साथ-साथ यहाँ बहुसंख्य किसान वर्गो में कुछ शिक्षित है | आजादी के बाद बनी विविध योजनाओं से नए तंत्र से लोगों के सपने पूरे नहीं हुए जिसके लिए वें लडे थे | गरीबों की समस्योओ का कोई उचित हल न निकल सका | गाँव के कई किसानों के घरों में बाढ़ आने से दो वक्त चूल्हा तक नहीं जलता | माँ-बाप के साथ कभी बच्चों को भी भूखा ही सोना पडता है | आजादी के बाद भी गोरखपुर के तिवारीपुर और पांडेपुरवा गाँव में स्कूल, अस्पताल, पुलिस चौकी, न ही यातायात की कोई सुविधाएं है | इन सभी सुविधाओं का अभावों को रामदरश मिश्रजी के उपन्यासों में चित्रित किया गया है |

बीज शब्द : - बाढ़, जनपद, आपदा, अंचल, ठाठें, बालियाँ, ऐंठन |

मूल शोध आलेख:

साहित्य समाज का आईना है | समाज में जो घटित होता है उसका प्रतिबिम्ब साहित्य में दृष्टिगोचर होता है | साहित्य को समाज का पथ प्रदर्शक भी कहा जाता है | उस में मानव जीवन के घात-प्रतिघात, हर्ष-उल्लास और आशा-आकांशाओं का चित्र अंकित किया जाता है | मानव जीवन मूल्यों की अभिव्यक्ति के लिए उपन्यास सर्वोत्तम माध्यम है | उपन्यास साहित्य में एक ओर भोगे हुए जीवन यथार्थ को उजागर किया तो दूसरी ओर देश के उपेक्षित अंचल को भी स्वातंत्र्योत्तर उपन्यासकारों ने महत्वपूर्ण मानकर उसे वर्ण्य विषय बनाया |

स्वातंत्र्योत्तर उपन्यासों में महानगरीय तथा ग्रामीण समस्याओं को अभिव्यक्ति मिली है | स्वतंत्रता के पहले भारतीयों के सपने थे कि आजादी के बाद सब को रोटी, कपडा और मकान नशीब होगा | लेकिन आजादी मिलने के बाद भारतीयों के ये सपने केवल सपने बनकर रह गये | परिणामस्वरुप स्वातंत्र्योत्तर उपन्यासों में मोहभंग, घूटन, टूटन, बेरोजगारी, अकाल, आर्थिक, दरिद्रता जैसे समस्याओं का निरुपण हुआ |

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में आँचलिक उपन्यासों का महत्वपूर्ण स्थान है| आँचलिकता बडा व्यापक अभियान है, जिसके अंतर्गत आँचलिक जीवन के या ग्राम्य जीवन की झाँकियां अभिव्यक्त होती है | डॉ.रामदरश मिश्र एक श्रेष्ठ आँचलिक उपन्यसकार है | डॉ. रामदरश मिश्र एक श्रेष्ठ आँचलिक उपन्यासकार है | उन्होंने अपने उपन्यासों में पूर्वी उत्तर प्रदेश आँचलिक क्षेत्र को अपने उपन्यासों का केंद्र बनाया है | गोरखपुर जिले के पूर्वी अंचल जो अविकसित और पिछडे हुए तिवारीपूर और पांडेपुरवा गाँव को केंद्र में रखकर उपन्यासों का सृजन किया है | डॉ.ममता शर्मा लिखती है कि – "रामदरश मिश्र का दूसरा उपन्यास "जल टूटता

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 2
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

हुआ" ग्रामीण अंचल समबन्धी उपन्यास है | गोरखपुर जिले का एक अविकसित या पिछडा हुआ गाँव तिवारीपुर इस उपन्यस की मूल कथावस्तु की आधार भूमि है |"[1]

डॉ.वी.पी. चौहान लिखते है – "ग्राम्यजीवन की सामाजिक चेतना और संघर्षको मिश्रजी ने ग्रामांचल से जोडा है | ग्रामांचल से सम्बन्ध होने पर भी उपन्यासकार समाजशास्त्रीय यथार्थ को व्यपक बनाता है |"[2] स्पष्ट है कि रामदरश मिश्र जी ने उपन्यासों की कथावस्तु ग्रामांचल से ली है |

तिवारीपुर और पांडेपुरवा की भौगोलिक स्थिति बडी विचित्र है, इनके चारो ओर से विभिन्न् छोटी बडी नदियों की धाराए होने के कारण जैसे इनका बाहरी दुनिया से कोई रागात्मक सम्बन्ध नहीं है | राप्ती और गौर्रा नदियों के कारण इनकी जीवन धारा कुछ रुक-सी गयी है | डॉ.ममता शर्मा लिखती है कि – "उपन्यास का कथ्य गोरखपुर जिले की राप्ती और गौर्रा नदियों की ऊफनती धाराओं के बीच बसे भू-भाग का यथार्थ जीवन है| इस उपेक्षित और शेष संसार में कटे-फटे, भू-भाग के भौगोलिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक परिवेश और आचार-विचार, रहन-सहन, रीति-रिवाजों की विशिष्ट अभिव्यक्ति इन उपन्यासों में हुई है |"[3]

बाढ़ एक प्राकृतिक आपदा है, जो वर्षा ऋतु में अत्याधिक वर्षा के कारण नालों, झरणों, खेतों, नदियों तथा जलाशयों में जलस्तर बढने से निर्माण होती है | नदियों का जलस्तर बढने से तथा उपरी भू-भाग का बांध टूटने से भी बाढ़ की आपदा निर्माण होती है | यह विपत्ती उस इलाके में अत्याधिक है जहाँ पहाडी और तराई का क्षेत्र होता है | पहाडी क्षेत्र में वर्षा तेज होने के कारण वहाँ का पानी कंकड, मिट्टी और रेत के अपने साथ बहाकर लाता है | वह कंकड, मिट्टी और रेत समतल में जाकर स्थित हो जाते हैं | परिणामस्वरुप नदियों को मार्ग उथला हो जाता है | बाढ़ के कारण खेती में बोए गये धान और फसल तबाह हो जाती है | यातायात प्रभावित होती है, मानव जीवन की सरलता नष्ट हो जोती है | "पानी के प्राचीर" उपन्यास में पांडेपुरवा गाँव का वर्णन करते हुए डॉ.रामदरश मिश्र लिखते है कि – "यह गाँव घोर कछार में बसा हुआ है | इस गाँव के चारो ओर फैली हुई नदियाँ बरसात में बिसों मील तक उमड़कर ठाठें मारती है | बाढ़ और बाढ़ ही बाढ़ दिखाई पडती है | दस बारह मील तक सवारी का कोई रास्ता नहीं है | बाहर से न कोई आता है, न जाता है | यह कछार प्रान्त अपने आप में स्वतंत्र है, पूर्ण है | इस विशाल क्षेत्र में न कोई अँग्रेजी स्कूल है, न अस्पताल, न पुलिस चौकी |"[4] स्पष्ट है कि स्वतंत्रता के बाद भी पांडेपुरवा गाँव में सुविधाओं और यातायात के साधनों का अभाव है | पांडेपुरवा गाँव गोरखपुर से बीस मील दूरी पर है, फिर भी आज भी पीछडा हुआ है |

जल में सृजन या निर्माण की क्षमता होती है | पर्यावरण में पर्याप्त असंतलुन के कारण वह विकराला विनाशकारी रुप भी धारण कर लेता है | पानी मानवता को जोडता है | किन्तु इस की कमी, अधिकता दोनों ही मनुष्य के लिए विघातक है | यही पानी की कमी या नदियों की बाढ़ दोनों ही स्थितियां त्राहि-त्राहि की परिस्थिति निर्माण कर देती है | बाढ़ के कारण खेत, खलियान मकान आदि बर्बाद होते हैं, गाँव के चारो ओर गंदगी, बीमारी, खामोशी फैल जाती है | मनुष्य, पशू-पक्षी भूख के कारण तडपते हैं, ऐसी भयंकर आपत्ति को ग्रामीण लोग दैवी आपदा या कोप समझकर अपने नशीब को कोसते है | डॉ.रामदरश मिश्रजी ने "पानी के प्राचीर" में इस स्थिति का मर्मस्पर्शी वर्णन किया है – "चारों ओर शोर हो रहा है, राप्ती बढ़ रही है, मदना में पानी गिर रहा है, खोजवा नाला भर गया | अब खेत बचना मुश्किल है |"[5]

वर्षा ऋतु के कारण बंजरभूमि भी हरी-भरी हो जाती है | प्रकृति हरी चदर ओढ लेती है | किसान खुश होकर खेती जोतता है, उसमें बीज बोता है | बीज अंकुरीत हो उठते हैं | कुछ ही दिनों में फसलों, खेत लहलहातें

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 2
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

नजर आने लगते हैं, किसान खुशी से झुम उठता है | "जल टूटता हुआ" का मास्टर सुग्मन भी ताल के खेत को देखकर खुश होकर मन ही मन सोचता है कि – "इसी ताल के कीचड़ में ये धान के पौधे कैसे लहरा रहे हैं | बादलों की सघन सजल छाया के नीचे ये पौधें कैसी मस्ती से झूम रहे हैं | मास्टर की आँखों से एक सपना तैर गया -- उमड़ते हुए धान, सुनहली बालियाँ भरा हुआ खलिहान | भगवान ! ठाठें मास्ती हुई यह धान की फसल यदि पार लग जाती तो, "गितवा" की शादी इस साल कर देता |"[6]

किसान के सपने-सपने ही रह जाते हैं | प्राकृतिक प्रकोप के कारण किसानों की आँखो के सामने सब कुछ तहस नहस हो जाती है, सब उजड जाता है | बाढ़ के कारण ग्रामीण जन-जीवन पर काफी दुष्परिणाम होता है | बाढ़ के कारण घर-मकान, खेती सब बर्बाद हो जाती हैं | इस अंचल में बाढ़ आती है, चली जाती है, परन्तु छोड जाति है अनेक अनुत्तरित प्रश्न | बाढ़ के बाद भूख कछार की भाष का दूसरा महत्वपूर्ण स्वर है | पूरा गाँव भूख से तड़प रहा है | प्राय: लोग एक वक्त सत्तू खाकर ही अपना जीवन व्यतीत करते हैं | सुग्गन मास्टर के लिए आजादी की वर्ष गाँठ उस समय कितनी असंगत लगती है जब इसे मनाने के लिए उसे भूखे पेट जाना पडता है | इसे समझाते हुए उपन्यासकार लिखते हैं – "मास्टर को लगा जैसे उसके पेट में कहीं एक तिखी ऐंठन हो रही है --- यहाँ यह ऐंठन ही है, खाली अतडियों ऐंठेगीं नहीं तो क्या करेंगी ? उसकी आँखों में बिता हुआ कल उतर गया | हाँ पाँच दिन पहले वह बाजार से कुछ मटर और जौ ले आया था, जो कल श्याम को खत्म हो गया | बच्चों के लिए तो कुछ अट भी गया, उसेऔर उसकी पत्नी को भूखे पेट सो जाता पड़ा |"[7]

पानी भविष्य की एक बडी वैश्विक चुनौती है | विश्व की आबादी निरंतर बढ़ रही है, भारत दुनिया का सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश है | पर्यावरण का ऱ्हास हो रहा है, प्रदूषण की समस्या निरंतर बढती जा रही है | वातावरण में असंतुलन दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा हैं | बारम्बार बादलों के फटने और अतिवर्षा से जल निकासी के मार्ग तटबंध तोडकर बहते हैं, बाढ़ से विनाशी लीला के दृश्य बनते है, अनेक द्वीप डूबने के खतरे है, त्युसुनामी के कारण जल प्रलय-सा दृश्य निर्माण हो कर विश्वव्यापी हाहाकार निर्माण होती है | 'जल टूटता हुआ' में रामदरश मिश्र जी लिखते हैं - "गाँव के चारों ओर खेतों में पानी ही पानी है, छाती भर पानी ! पानी में जानवरों और आदमियों की लाशे उतरा-उतरा कर बही जा रही है | हाहाकार करती हुई हवा लहरों को उठा-उठा कर फेंकती हुई यहाँ से वहाँ तक भागी जा रही है |"[8] बाढ़ तो हर साल आती हैं, हर साल सब कुछ ले जाती है और आषाढ़ में ही रबी की पूँजी खाकर लोग माघ-फागुन तक न जाने कैसे जूझते हैं | डॉ.रामदरश मिश्र जी ने सतीश के माध्यम से लिखा है – "क्वार था, तो भी हलका-हलका झींसा पड़ रहा था | सतीश हल्का-हल्का भीग रहा था | सामने फैले हुए नंगे खेत बाढ़ की बरबादी की मौन कथा कह रहें थे | हां, नंगी धरती, धरती का जड़ सन्नाटा, सन्नाटे के भीतर सोया हुआ संघर्ष, टूटने बिखरने का भयानक शोर, जड़ से सन्नाटे को चिरते हुए ये हल-बैल, जड़ता की छाती में बिखरते हुए बीज, लहलहाते अंकुर, झूमती फसलें और फसलों के कट जाने के बाद का सन्नाटा --- सतीश को लग रहा है कि जैसे यह धरती जीवन उसके जीवन का प्रतीक बन गया है |"[9]

राप्ती नदी का उद्गम नेपाल में स्थित धौलगिरी पहाडियों के निचले हिस्से से हुआ है | पहाड़ी क्षेत्र से तराई क्षेत्र में आने तक लगभग 250 कि.मी. की दूरी तय करते समय गति तीव्र होती है | पहाड़ी क्षेत्र के अन्य छोटे-छोटे जल स्त्रोतों का विलय इसमें होने से इसकी तीव्रता बढती है | पहाड़ी भू-भाग से नेपाल की तराई में जब पहुँचती है तो इसका मार्ग परिवर्तित होता रहा है | मार्ग में परिवर्तन होते रहने से जल के साथ मिट्टी, कंकड, रेत आदि तराई क्षेत्रों में अपने मार्ग में डालते रहने से जल ग्रहण क्षमता का ऱ्हास होता जा रहा है | राप्ती नदी के मार्ग बदलने की प्रवृत्ति के कारण इसके मार्ग में परिवर्तन होता रहता है | परिणामस्वरुप एक गांव, एक

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 2
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

तट से दूसरे तट पर पहुँच कर शिफ्ट हो गये हैं | राप्ती और गौर्रा नदीपर बाँध बनवाए गये हैं | किन्तु वर्षा ऋतु में तेज वर्षा होने से पानी का बहाव तेज हो जाता है | बाँध टूट जाते हैं और जल प्रलय जैसी स्थिति निर्माण हो जाती है | उस स्थिति का वर्णन करते हुए उपन्यासकार लिखते हैं – "हे भगवान ! यह बाँध ही गांव का सहारा है, टूटेगा तो परलय हो जायगा | शैतानवा नाला उफन उठा है | बाँध की ऊँची सतह एक हाथ और बाकी है | अब फुटा तब फुटा | भाईयों चलों, बाँध को और ऊँचा करो | राप्ती नदी शैतानवा नाले के द्वारा परलय का मुँह बाये हुए आ रही | गौर्रा का पानी दूसरी ओर से नीचे के खेतों में फैल रहा है | लोग लहलहाते खेतों की फसलें उखाड-उखाडकर अपने बेटे के शव की तरह कंधे पर लाद-लादकर घर ला रहे है |" स्पष्ट है कि गोरखपुर जिले के जनपद में प्रवेश करते ही राप्ती और गौर्रा नदी विकराल रुप धारण कर प्रलयकारी बन जाते हैं |

बाढ़ से बचने के लिए गांव के लोग बांध परियोजना के कार्य में लग जाते हैं| इस कार्य में सभी लोग नीजि विरोध की भावना, जातिय दुश्मनी की भावना भूलकर सभी एकजूट होकर इस कार्य में लग जाते हैं | मँझरिया नाला पर बाँध बाँधने का ऐलान होता है | तिवारीपुर के गांव वाले सभी आप-सी दुश्मनी को भूल कर मँझरिया नाले पर बाँध बाँधते हैं | किन्तु वह भी अधिक दिनों तक टिक नहीं पाया | आखिर नाग पंचमी के दिन ही मंझरिया नाले पर बाँध फूट जाता है | 'जल टूटता हुआ' में मिश्रजी लिखते है – "नाग पंचमी का दिन ! गांव ने बडी कोशिश की, मँझरिया नाले का मुंह बांधने की – लेकिन ऊपर की रोज-रोज की बारीश और नीचे से नाले के उफनते हुए जल के दुहरे दबाव में बांध फूट ही गया | उफनती हुई फसले देखते-देखते डूब गई | जैसे किसी बाप के सामने उसका लड़का मार डाला जाए ! लोग आँखो में अकथ दर्द भरे अपने-अपने दरवाजें पर पड़े हुए थे |"[10] रामदरश मिश्र जीने अपने अनुभव की आंतरिक चेतना को आँचलिक उपन्यासों में अभिव्यक्त किया है |

निष्कर्ष:

रामदरश मिश्र जी के उपन्यासों में ग्राम्य-जीवन का यर्थाथ अंकन हुआ है | भारत की लगभग पचहत्तर प्रतिशत जनसंख्या गाँवो में निवास करती है | परिणामत: हमारे देश की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है| अधिकतर किसानों की खेती वर्षा ऋतु के पानी पर निर्भर है | किन्तु आज पर्यावरण में पर्याप्त असंतुलन आ गया है | इसलिए वर्षा ऋतु में कभी वर्षा नहीं होती, तो कभी तेज वर्षा होती, कभी बादल फट पडते हैं | इन सभी का नतीज किसान को ही झेलना पडता है | कभी वर्षा न होने से फसल नष्ट होती है, तो कभी वर्षा अत्याधिक होने से फसल को नष्ट करती है | भारत के किसानों की आर्थिक दशा खस्ता होती जा रही है |

रामदरश मिश्र जी के उपन्यासों में पूर्वी उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले के तिवारीपुर और पांडेपुरवा नामक गाँव बाढ़ की समस्याओं से प्रभावीत है | इस आंचल की राप्ती और गौर्रा नदी की बाढ़ ने यहाँ के किसानों को जीवन ही ध्वस्त कर दिया है | पांडेपुरवा और तिवारीपुर गाँव में पाठशाला, अस्पताल, रास्ते, यातायात के साधनों का अभाव है | बाढ़ यह प्राकृत आपदा है, इसने किसानों की आर्थिक कमर ही तोड दी है | इस गाँव के लोग बाढ़ से बचने के लिए आपस के बैर-भाव भूलकर, संघटीत होकर बाँध बांधते है, लेकिन राप्ती और गौर्रा नदी का सतई तल या उथला तल के कारण बाढ़ का पानी बाँध को तोडकर बहा ले जाता है | सन 1950 से लगातर राप्ती नदी में बाढ़ आती रही | वर्ष 1998 की प्रलयकारी बाढ़ से जनपद में स्थित बाँधो में 20 बाँध टूट जिस में 17 बांध केवल राप्ती के टूटे | आपदा प्रबन्धन अधिनियम – 2005 के तहत, गोरखपुर जिला बाढ़ प्रबन्धन एवं न्यूनीकरण योजना बनायी गयी | बाढ़ प्रबन्धन एवं न्यूनीकरण योजना के अन्तर्गत अनेक बाँध

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 2
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

बनाए जो रहे हैं, तथा नदी का उथला तल को गहरा बनाया जा रहा है | पूर्वी उत्तर प्रदेश के गोरखपुर के पूर्वी जनपद को बाढ़ से बचाने के लिए यही एक मार्ग है कि राप्ती और गौर्रा नदी के सतई तल की मिट्टी निकालकर उसे गहरा बनाया जाए | तब उस अंचल के किसानों का जीवन खुशहाल हो सकता है, वहाँ कृषि हरीभरी हो कर किसानों का आर्थिक विकास संभव है |

संदर्भ : -

1. डॉ.ममता शर्मा – रामदरश मिश्र के उपन्यासों में ग्राम चेतना (जल टूटता हुआ के संदर्भ में) – आर. जी. प्रकाशन, पिपलोद बस स्टेन्ड के पास, डूमस रोड, सुरत – प्र.2004, पृ.45
2. डॉ.वी.पी चौहान – रामदरश मिश्र के कथा साहित्य में ग्राम्य जीवन – चिन्तन प्रकाशन, हंसपुरम, कानपुर – 208021 प्र.2004, पृ.20
3. डॉ.ममता शर्मा – रामदरश मिश्र के उपन्यासों में ग्राम चेतना – आर. जी. प्रकाशन, पिपलोद बस स्टेन्ड के पास, डूमस रोड, सुरत – प्र.2004, पृ.48
4. रामदरश मिश्र – पानीके प्रचीर – वाणी प्रकाश न 21 – ए, दरियागंज, नयी दिल्ली – 110002 सं. 1994, पृ.87
5. वही – पृ.102
6. सं. रामदरश मिश्र, स्मिता मिश्र – रामदरश मिश्र रचनावली खण्ड – पाँच, नमन प्रकाशन नई दिल्ली – 110002 प्रथम सं.2000, पृ.205
7. वही – पृ.202
8. वही – पृ.214
9. वही – पृ.245-246
10. वही – पृ.201

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved